VIDEO Play AUDIO

## भजन

तर्ज....अब क्या मिसाल

कोई नहीं मिसाल मेरे हक सुभान की
नाकाम हो गई है जुबां ला–मकान की

1) सुन्दर सरूप आपका इक बार देखकर
दीदार करते – करते थकती नहीं नजर
नजरें भी प्यार दे रही मेरे मेहरबान की

2) वाकिफ नहीं ज़माना अर्श– अजीम से
हक ने दिखा दिया है रुह को करीब से
यह रहमतें हजूर की किसने बयान की

3) माशूक की सिफत तो शब्दों से दूर है
बेशुमार इश्क साहेबी बेशुमार नूर है
प्यारी–सी गुफ्तगू है बहुत हक़ जुबान की

4) शोभित हैं राज–श्यामा जी गुन्चे में रूहों के
करते हैं गुझ इसारतें चित खैंच रूहों के
नजदीकियाँ ये प्यार मरी बेशुमार दी